इतिहास के पन्नों से

किरन्दुल की अग्निगर्भ से

शंकर गुहा नियोगी

शहीद शंकर गुहा नियोगी यादगार समिति
लोक साहित्य परिषद

रक्तगाथा का नया अध्याय–

बस्तर फिर एक बार आहत है – लहु लुहान है। उसके अर्द्ध शताब्दी इतिहास में चौथी बार गोली चली है। शहर की सभ्यता और कानून के प्रशासन ने उसे सिर्फ गोलियां दी है। शोषण के तीखे दंश दिये हैं और उसका सर्वस्व छीना है। इस बार ५ अप्रेल को बैलाडीला लोह अयस्क संयंत्र के प्रशासनिक न सिर्फ गोली चली बल्कि आगजनी लुटमार से इलाका दहन हो उठा हैं। मजदूर बस्ती की लगभग दो हजार झोपड़ी जलकर राख हो चुकी है। और उसके साथ ही सैकड़ों अनाम अंजान परिवार गहराई गहराई तक टुटे और बिखरे हुए आस–पास के जंगल में बिखर गये हैं। अजीब सी दहशत का साम्राज्य है। गोलीबारी के दो हफ्ते गुजर जाने के बाद भी किरन्दुल में शोषण का सन्नाटा है। सहमे मजदूर अपनी बात कहने का भी साहस नहीं जुटा पा रहे हैं हथियार बंद लारीयां आज भी घुम रही हैं।

(६ मई दिनमान, रमेश नायर की रिपोर्ट के आधार पर)

- *बैलाडीला की रक्त रंजित पहाड़ियों से छत्तीसगढ़ में जनयुद्ध की शुरुवात*
- *दल्ली-राजहरा के खूनी नाटक की नई कड़ी किरंदुल कांड*
- *आगजनी, हत्या और सामूहिक बलात्कार*
- *संशोधनवादियों की न-पुंसक राजनीति*

रायपुर से २९७ किलोमीटर दूर जगदलपुर और जगदलपुर से १२० किलोमीटर दूर किरन्दुल इलाका। आज से १५ वर्ष पूर्व जंगल और काली पहाड़ियों की गोद में एक प्राचीनतम सभ्य समाज की परंपरा और उसके गौरव की निशानी आदिमजाति अपनी जिन्दगी जी रही थी, अपनी मस्ती और अपनी मादकता के साथ। यहां अपनी प्रेमिका को पाने के लिए जब प्रेमी गाता था कि–

कि करिट ए नूनी बाइयों
मम देश इतके नूनी

तब इस लोग गीत से जंगल झुम जाता है। मगर आज वह पूरा इलाका पूरा जंगल दहशत, गुस्से और नफरत की आग में जल रहा क्योंकि अपना हक मांगने वालों को मौत का तोहफा मिला है. अपनी इज्जत की रोटी कमाने वाली छत्तीसगढ़ी महिलाओं को सामूहिक बलात्कार का शिकार बनाया गया है और नई जिन्दगी के सपने देखने वाले बच्चों को उनकी झोपड़ी मे आग लगाकर राख कर दिया गया है।

अंग्रेजों के जलियां वाला बाग हत्याकांड को भी शरमा देने वाला खूनी नाटक किरन्दुल-गोलीबारी के नाम से मशहूर हैं जो कि छत्तीसगढ़ के नये जनयुद्ध की भूमिका बन रही हैं।

वहां भयंकर आगजनी से दस हजार छत्तीसगढ़ी संतान बे-घर बार हुई है। आज वहां लोहा लक्कड़ का घर–घर मर–मर आवाज ठेकेदारों के अत्याचार से पीड़ितों के दर्दनाक आवाज जगह-जगह मानव रक्त का निशान सामूहिक बलात्कार से पीड़ित महिलाओं आर्तनाद हर जगह डाकिनी योगिनी, राक्षसों के नाटकीय कार्यक्रम इतिहास को स्तब्ध करता है।

बैलाडीला में संशोधनवादी नेतृत्व ने खदान मजदूरों की लौह-दृढ़ एकता को ध्वस्त किया। खदान की डिपाजिट न. १४ एवं डिपाजिट नं. ५ (जो अभी अभी चालू हुई है) में मशीनीकरण से खदान कार्य होता है। इस कार्य में जुड़े मजदूर भारत के विभिन्न प्रान्तों से आये हुए हैं।

मैन्युअल माइंस के मजदूर प्रधानत: दुर्ग, बिलासपुर, रायपुर, एवं राजनांदगांव जिले के छत्तीसगढ़ी लोग ही हैं। कुछ गंजाम जिला एवं कालाहंडो जिला के उड़िया मजदूर हैं। गांवों के ये भूमिहीन एवं गरीब किसान, गरीबी, अकाल व सूखा के कारण गांव से भागकर नौकरी की तलाश में भटकते-भटकते यहां पर आये और लगभग सात आठ साल से कार्यरत थे।

मालिक

मालिक दो प्रकार के हैं। एक एन. एम. डी. सी. के सरकारी नौकरशाही मालिक तथा दूसरे ठेकेदारी प्रथा के मातहत मालिक ठेकेदार।

ठेकेदार

संयोग की बात है कि मजदूर यहां के ठकेदारों को कम्पनी के नाम से पुकारते हैं जो कि ईस्ट इडिया कम्पनी की याद दिलाती है। तीन प्रमुख ठेकेदारों के मातहत ३१ मार्च तक मैन्युअल माइंस में काम चलाया जा रहा था। ये हैं ठेकेदार (१) बोरा कम्पनी (२) अशोक माइनिंग कम्पनी (३) भामोट कम्पनी इन तीनों ठेकेदारों का थोड़ा सा परिचय बताना जरूरी है।

बोरा कम्पनी

यह धनवाद की कम्पनी है। धनवाद कोयला खदान इलाकों में वहां के मजदूरों को वर्षों से शोषण करता रहा है एवं आतंक का राज बनाकर रखा था। कुछ महीना पहले धनबाद कोयला खदान इलाके के लोकप्रिय मजदूर नेता शक्ति महातो की हत्या कराने में भी इनका हाथ था।

अशोक माइनिंग कम्पनी

इस कम्पनी के कर्णधार, छत्तीसगढ़ की तमाम खदानों के ठेकेदार बनने के पहले साहूकारी का धंधा करते थे। छत्तीसगढ़ में उद्योगों के विकास के साथ ही साथ इसके मालिक का विकास इतनी तीव्र गति से

हुआ कि वह उंगली फूलकर केले का झाड़ बन गयी। यही उदाहरण इस कम्पनी के लिए लागू होता है, दल्लीराजहरा में जो गोलीकांड हुआ उसमें इस कम्पनी का हाथ था।

भानोट कम्पनी

बनारसीदास भानोट इस कम्पनी का मालिक है। बैलाडिला में इस कम्पनी को लोग गुण्डा कम्पनी के नाम से पुकारते हैं। इस कम्पनी के मालिक की गुण्डागर्दी किसी भी आजाद एवं प्रजातांत्रिक देश में संभव नहीं है। खदान में जाकर मजदूरों को मारना पीटना नित्य दिन की बात है। अगर कोई मजदूर अपने हक की बात करता है तो उसे कमरे में बंद करके अधमरा होते तक पीटा जाता है।

मजदूर यूनियन

यहां दो मजदूर यूनियन है। एक मेटल माइंस वर्कर्स यूनियन (एम.एम.डब्ल्यू.यू.) (इन्टक यूनियन) और दूसरा संयुक्त खदान मजदूर संघ (एस.के.एम.एस.) (एटक यूनियन)। इन्टक यूनियन कम्पनी एवं एन.एम.डी.सी. मैनेजमेंट की दलाल यूनियन और एटक यूनियन संशोधनवादियों की यूनियन है।

मध्यकालीन ठेकेदारी प्रथा एवं मजदूरों की रोजी रोटी

बोरा कम्पनी जिसका इस गोलीकांड के पीछे सबसे ज्यादा स्वार्थ सिद्ध हुआ, (मध्यकालीन) ठेकेदारी प्रथा का जाल बिछाकर जोर जुल्म एवं शोषण का राज्य चला रहा है। इस बोरा कम्पनी ने कम से कम ७० मामुली आदमियों को ठेकेदार की पदवी देकर मजदूरों को गुलामी के जंजीर में बांध रखा है। यह पदवीधारी ठेकेदार लोग अपने मजदूरों को अलग दफाई बनाकर रहने देते हैं और खुद भी उसी दफाई में रहकर मजदूरों के ऊपर चौबीसों घंटे निगराना रखते है। विभिन्न सामाजिक कारणों के बहाने बनाकर मजदूरों को आपस में लड़वाकर खुद मजा लेते हैं। बैलाडिला के मजदूर बस्ती इन ठेकेदारों के नाम से परिचित है जैसे प्रभू कैम्प, गजराम कैम्प, मिश्रा कैम्प आदि।

काम के घंटे

बैलाडिला में महान "मई दिवस" की खबर आज तक नहीं

पहुंची है। खदान के मजदूर शीत, ग्रीष्म एवं बरसात के तीनों कालों में सबेरे ६ बजे से शाम ६ बजे तक १२ घंटे की शिफ्ट में काम करते है। आने व जाने के समय को लेकर इनको काम के लिए १६ घंटे व्यस्त रहना पड़ता है। दिन रात का शेष ८ घंटा खाना पकाना, नहाना, खाना खाना एवं सोने के लिए बचे रहता है। काम के समय के बाद मजदूर को आपसी मेल मुलाकातों मनोरंजन आदि के लिये थोड़ा सा भी समय नहीं मिल पाता।

मजदूरी की दरें

बैलाडिला और राजहरा में मिलने वाली मजदूरी का तुलनात्मक विवरण निम्नानुसार है।

	बैलाडिला में	राजहरा में
लोह अयस्क के रेंजिग एवं ट्रान्सपोर्टिग (लोडिग अनलोडिग मिला के)	३-२० पैसा प्रति टन	६-०० रु. प्रतिटन
दैनिक रोजी वाले मजदूर	३-००रु. प्रतिदिन	१२-००रु. प्रतिदिन

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि बैलाडिला का मजदूर १२ घंटे की मेहनत के बाद ३ रु. मात्र ही कमा सकता हैं। यहां आयरन और वेज बोर्ड या दूसरे किसी भी प्रकार के वेज बोर्ड की सिफारिश लागू नहीं है। यहां किसी भी प्रकार के न्यूनतम वेतन नियम लागू नहीं है। फाल बैक वेजेस का तो प्रश्न ही नहीं उठता। छुट्टी का पैसा मेटर्निटी बेनिफिट (जचकी का पैसा) आदि का तमाम पैसा ठेकादारों की तिजोरी से निकलता ही नहीं। चिकित्सा का भी बन्दोबस्त नहीं होता। बोनस जहां २०० रुपया मिलना चाहिए वहां २०-२५ रूपया में ही निपटारा कर लिया जाता है।

भ्रष्टाचार शब्द एन. एम. डी. सी. के आचार संहिता में स्थान पा गया है।

मजदूर भूख से तड़फता हैं परन्तु एन. एम. डी. सी. वालों का कहना है कि नोट यहां हवा में उड़ता है, जितना हो सके उतना बीनो और झोले भरो। सबके सब आफिसर ठेकेदारों से मिले हुए हैं। प्रोजेक्ट इंजीनियर श्री कामला तो पहले कोयला खदान में बोरा कम्पनी के ही मैनेजर थे।

एन. एम. डी. सी. के वेलफेयर आफिसर को मजदूरों की पेमेंट रजिस्टर से दस्तखत करने के लिए पैसा मिलता है। माइंस मैनेजर से लेकर फोरमेन तक मजदूरों के ऊपर अत्याचार एवं निर्मम शोषण देखकर भी कुछ नहीं बोलते क्योंकि उनके जेब ठेकेदारों के पैसों से भरे रहते हैं, आंखे सल्फी और विदेशी मदिरा के नशे से अधबुझी रहती है और रातें नित्य नया पीकी (आदिवासी बाला) मोटियारी को सानिध्य में रंगीन रहती है। इस एशो आराम दुनिया की और अधिक मधुर बनाने के लिए ठेकेदारों मजदूर के ताजा खून में एक एक सिक्का डुबाकर अपनी अपनी तिजोरी में भरता जाता हैं। कोयला खदान में यही एन. एम.डी.सी. वाले वेजबोर्ड की सिफारिसों को मान लिये हैं, परन्तु यहां आयरन ओर वेज-बोर्ड मानने के लिए इन्कार कर दिये। मजदूर आन्दोलन का सामना न करना पड़े इसलिए ठेकेदारी प्रथा से काम चलाया। फिर जब मजदूर संगठित हुए तब मशीनीकरण का रास्ता अपनाया। अभी अभी डिपाजिट नं. ५ चालू कर १० हजार मजदूरों को जिनकी बदौलत इस देश ने करोड़ों रूपये वैदेशिक मुद्रा कमाया, छटनी करने पर तुले हैं।

मशीनीकरण क्यों ?

देश में एक तरफ तो करोड़ों लोग बेरोजगार हैं, दूसरी ओर इंदिरा गांधी के जमाने से लगातार मशीनीकरण की प्रक्रिया शुरू है। इस मशीनीकरण की चपेट में आकर और लाखों आदमी सात-आठ साल काम करने के बाद आज बेरोजगार हो रहा है एवं होने जा रहा है।

लोहे की खदानों के मशीनीकरण करने से क्या फायदा होगा ? मेकेनाइज्ड खदान के लोहे की दर हमेशा मेन्युअल खदान की दर से अधिक होती है। डिपाजिट न. ५ की उत्पादन लागत प्रतिटन रु. ४०.००, डिपाजिट नं. १४ की रु. ३३.०० प्रतिटन है जबकि मेनुअल खदानों में मात्र रु. १९-०० है। फिर सरकार मशीनीकरण क्यों कर रही है ? इसका कारण है। कुछ विदेशी राष्ट्रों के कारखानों में भारी मशीनें बन रही है जिसकी खपत होनी चाहिए। हमारे देश की नौकरशाही को घुस देकर विदेशियों ने हमारे यहां कलपूर्जे तथा भारी मशीन जबरन थोप दिया है और देश-द्रोही नौकरशाह, देश की अर्थनीति को चौपट कर विदेशियों की सेवा में

लगा हुआ है। जब तक देश के शहरों एवं गांवों के लोग एक आवाज में मशीनीकरण का विरोध नहीं करेंगे तब तक इन देशद्रोहियों का राज चलता ही रहेगा। बैलाडीला में जो डिपाजिट नं. ५ का मशीनीकरण किया गया हैं, दल्ली राजहरा में जो कोण्डे प्लांट बनाया गया है, इसका विरोध छत्तीसगढ़ के कोने-कोने में एक आवाज से होना चाहिए। **३०९ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा कमाने वाले छत्तीसगढ़ी लोग अब दर दर की ठोकर खायेंगे।**

बैलाडीला में कार्यरत मजदूर जो अब छटनी के शिकार हो गये है व होने जा रहे हैं, अब तक अरबों रू. कमाई कर देश की समृद्धि में वृद्धि किया हैं जिसमें ३०९ करोड़ रूपये सिर्फ विदेशी मुद्रा ही है।

जनवरी १९७८ तक आय-व्यय का हिसाब (करोड़ रुपयों में)

आय		व्यय	
वैदेशिक मुद्रा	३०९-००	रेल्वे खर्च	४२.००
जहाज किराया	३७.००	परियोजना व्यय	३५.५०
निर्यात कर	३५.००	स्थापना खर्च	४.००
रेल्वे किराया	१७४.००		
राज्य शासन को दी गई रायल्टी	७.५०	योग	८१.५०
मजदूरी कल्याण कोष	१.१०	शुद्ध लाभ	४८२.१०
योग	५६३.६०	योग	५६३.६०

मशीनीकरण के बाबत एटक (सी.पी.आई.) के बड़े नेताओं की गद्दारी

रुसी सामाजिक साम्राज्यवाद की दलाल एटक के नेताओं ने सोवियत रूस के इशारे पर, जब इंदिरा के जमाने में कोण्डे प्लांट (राजहरा) एवं डिपाजिट नं. ५ (बैलाडीला) का मशीनीकरण का प्रस्ताव पर अमल होने लगा तब विदेशियों के पैर चांटने वाले डांगे–श्रीवास्तव चक्र ने मजदूरों को छटनी के बारे में लिखित समझौता कर दिया था। और जब मजदूरों की छटनी होने लगी तब मजदूरों को धोखा देने के लिए भूख–

हड़ताल का ढोंग रचा। ठेकेदारों से रीट्रेंचमेन्ट का पैसा मांगा और अपना निर्दोषता बताने के लिए भाषणबाजी कर मजदूरों को गुमराह करते रहे।

सोवियत रुस का पूंजी का वर्ग चरित्र–

सोवियत रूस का पूंजी जब से इस देश में आना चालू हुआ तब से गद्दार डांगे गुट एवं नया संशोधनवादी ज्योति वसु–नम्बुदिरिपाद कम्पनी चिल्लाना चालू किया कि सोवियत पूंजी प्रगतिशील पूंजी है। इस पूंजी के रहते भारत की आजादी सुरक्षित रहेगा। यह पूंजी देश की आजादी का मदद करेगी।

परन्तु सोवियत पूंजी भारत की प्रतिक्रियावादी नौकरशाही दलाल पूंजी के साथ सांठ गांठ चालु किया यह बात छुपाया गया है। खेमका एण्ड कम्पनी भारत की ७५ दलाल पूंजी घराने में एक है।

सोवियत रूस इस खेमका एण्ड कम्पनी के मातहत भारत में तमाम माइंस को भारी मशीनरी का विक्रय करता है। दल्ली का कोण्ड प्लांट एवं बैलाडीला का डिपाजिट नं. ५ में जो भी मशीनरी आई है वह सोवियत रूस खेमका कम्पनी के मातहत बेचकर अपना सामाजिक साम्राज्यवादी चेहरा को बेनकाब किया है।

बलाडीला आन्दोलन का विश्लेषण–

अशोक माइनिंग कम्पनी को नया टेण्डर नहीं दिया गया। ३१ मार्च तक इस कम्पनी का काम था। ठेकेदारों द्वारा यह खबर बताने पर मजदूरों में हलचल मच गई। इस कम्पनी में करीब चार हजार मजदूर कार्यरत थे। मजदूर युनियन के पास गये। इन्टक के नेता सिद्दीकी एवं ए. पी. खान तो शोषण करने वाले नेता थे। इन लोगो ने एन.एम.डी.सी. मैनेजमेन्ट को साथ देने का वचन दिया। एटक के स्थानीय नेता इन्द्रजीत सिंह इस छटनी का विरोध किया, इन्द्रजीतसिंह ने बहुत ही प्रतिकूल स्थिति में रहकर आंदोलन की रूपरेखा बनाई थी। एक तो एस.के.एम. एस. का केन्द्रीय नेतृत्व द्वारा इंदिरा के जमाने में प्लांट एवं छटनी के समझौता से इन्द्रजीतसिंह का दिल कमजोर हो गया था। दूसरा एस. के. एम. एस. का स्थानीय नेतृत्व में एन. एम. डी. सी. के अच्छा तनखा मिलने वालों को ही बहुलता के कारण आन्दोलन में इन्द्रजीत सिंह को अच्छा सहायक नहीं

मिला था । श्री पांडे के ऊपर मजदूर का भी भरोसा नहीं था । मैनेजमेन्ट सरकार एवं ठेकेदार के लोग भी पाण्डे से दबता व डरता नहीं था । खदान मजदूरों में राजनैतिक चेतना का अभाव था एवं गांव के किसान इस आंदोलन में सहयोगी नहीं बन पाये थे । इन प्रतिकूल परिस्थिति में रह कर इन्द्रजीतसिंह ने नेतृत्व सम्हाला । ७ तारीख को ठेकेदारों ने समझ लिया था कि अब नया ठेका नहीं मिल पायेगा । ८ तारीख को इन्द्रजीत सिंह ने जूलुस निकाला । ९ तारीख को तिरंगा के नेता (इंटकी) सिद्दीकी एवं खान एन. एम. डी. सी. मैनेजमेंट से मिलकर शासन और मैनेजमेन्ट को साथ देने का वचन दिया ।

१० तारीख को मजदूर क्रमिक भूख हड़ताल शुरु किये । ११ तारीख से बोरा कम्पनी में हलचल हुई । बोरा कम्पनी का मजदूर भी समझ गया कि छटनी के चपेट में वे भी आ सकते हैं । मजदूर छटनी के नाम से आतंकित होते गये उनके अन्दर एकता एवं संघर्ष की भावना तेज होती गई । एक लौह दृढ़ एकता बन गई ।

फिर भी एन एम.डी.सी. वालों ने अशोक माइनिंग कम्पनी का ठेका नहीं बढ़ाया । क्रमिक हड़ताल करते करते स्थानीय नेतृत्व हताश हो रहे थे । एस के. एम. एस. का ऊपर के नेतृत्व कोई भी प्रकार का मदद नहीं किया । इन्द्रजीत सिंह अकेला पड़ गया । २८ मार्च को इन्द्रजीत सिंह ने सोचा कि आन्दोलन तीव्र करना चाहिये । २९ तारीख, भूख हड़ताल खत्म कर दिया गया । अशोक माइनिंग कम्पनी के मजदूरों के ऊपर से ध्यान हटा दिया गया एवं बोरा कम्पनी में हड़ताल कराई गई ।

अशोक माइनिंग कम्पनी के अधिकांश मजदूरों ने फायनल पेमन्ट ले लिया एवं चलते बने । इसमें आन्दोलन की यथार्थता पर प्रहार हुआ । इन्द्रजीत छुप गये एवं छुप छुप कर आन्दोलन का नेतृत्व देते रहे । नेतृत्व सही रास्ता नहीं निकल पाया । ठेकेदार, एन. एम. डी. सी. के नौकरशाहों ने एवं शासन ने नेतृत्व की इस असहाय अवस्था को समझा एवं निर्मम श्वेत आतंक के सहारे आन्दोलन को कुचलना चाहा । फिर क्या पुछना था, वियतनाम की माई-लाई एवं अंग्रेज जमाने की जलियां वाला बाग को भी मात करने वाला ५ अप्रेल का बैलाडीला का वीभत्स अत्या-

चार का कलंकित इतिहास। इस अत्याचार का वर्णन करने की शक्ति मेरी कलम में नहीं है। इसके लिये छत्तीसगढ़ के बुद्धिजीवियों को आगे बढ़ना पड़ेगा।

नेतृत्व की गलतियां–

(१) खदान मजदूरों में से मजबूत समझदार कार्यकर्ता तैयार न कर पाना।

(२) अशोक माइनिंग वाले मजदूरों के चले जाने पर आन्दोलन का पुनर्विचार न कर पाना।

(३) छटनी से काफी दिन पहले से कम से कम तीन महीना) ही आंदोलन शुरू न करना।

(४) आदिवासी किसानों को इस आन्दोलन में न समेट पाना।

(५) जानते हुए भी इन्द्रजीत संशोधनवादी गद्दार नेतृत्व से अलग न हो पाये।

(६) एस.के.एम.एस. के अंदर के घूसखोर, मालिक परस्त नेताओं के प्रति इन्द्रजीत उदारतावादी थे। इटका विरोध नहीं किये थे।

(७) एस. के. एम. एस. के पदाधिकारियों एवं कार्यकारणी में खदान एवं लोडिंग मजदूरों को स्थान न दे पाना।

(८) प्रजातांत्रिक आन्दोलन के बारे में वर्तमान परिस्थिति के मुताबिक असली तजरूबा न होना।

(९) मजदूरों में राजनैतिक चेतना का अभाव।

५ अप्रेल छत्तीसगढ़ के इतिहास का काला दिन

मजदूर तीन हिस्से में बंटे थे। जनरल मैनेजर के आफिस के सामने आधा मजदूर धरना दे रहे थे। कुछ मजदूर चकर का पहरा दे रहे थे और बाकी मजदूर अपनी झोपड़ी में रहने लगे। २ अप्रेल को श्री चन्चना बोरा कम्पनी के मैनेजर, खान, सिद्दीकी, जोशी कुछ पेटी ठेकेदार एवं पुलिस अधिकारी तथा एन.एम.डी.सी. के उच्च अधिकारियो की बैठक हुई। श्री चन्चना का कहना था जब तक आन्दोलन में हिंसा नहीं आयेगी

तब तक मजदूरों का पल्ला भारी रहेगा। मजदूरों को सताओं तब मजदूर हिंसा पर उतारू होंगे और तब पुलिस के जवान भी अपना ताकत बता सकेंगे। श्री चन्चना का हतकंडा मान लिया गया। खान – सिद्दीकी की जोड़ी केम्प में जाकर लाल मजदूरों के खिलाफ घृणा फैलानें का काम करने लगी। तिरंगा वाले एक लाल मजदूर मुखिया को ३ दिन तक घर में बन्द कर रखे थे। उस मजदूर मुखिया का खाना-पीना, टट्टी-पेशाब आदि बन्द कर दिया गया।

सिक्यूरिटी फोर्स के जवान तो आधा पशु होते ही है। इनको बताया गया कि जवान महिलाओं को छेड़छाड़ चालू करो। सिक्यूरिटी के जवान महिलाओं पर कूद पड़े। एवं धरना स्थल पर ही महिलाओं का छाती दवाना तथा बलात्कार करने का क्रम जारी किया। मजदूर बौखला उठे। इन्सपेक्टर शर्मा का काम था इन्द्रजीत का खोजना। इस बहाने वह वह किसी के भी घर में घूस जाता था, विरोध करने पर धक्का मुक्की एवं चांटो से स्वागत करता था। अत्याचार एवं पाशविक दमन से मजदूर त्रस्त हो रहे थे। उनके अन्दर नाजायज हिंसा को जायज हिंसा से प्रतिरोध करने की भावना बनती गई परन्तु डांगे के चेला हिंसा शब्द से डर जाते है। प्रतिरोध की लाईन न बनाकर उन्होंने हाथ-पैर ढीला कर मजदूरों को मार खाने के लिये मजबूर किया और पुलिस एवं सिक्यूरिटी वालों की पाशविकता को बढ़ावा दिया।

हार रे ! गांधीवादी कम्युनिष्ट !

बहुत मजदूर मुखिया एवं कुछ पुलिस जवानों का कहना है कि अगर शुरू से ही मजदूर तगड़ा विरोध करते तो शायद हिंसा को रोका जा सकता था।

५ अप्रेल को सबेरे ९.३० वजे इस्पेक्टर शर्मा इन्द्रजीतसिंह को पकड़ने केम्प के अन्दर पहुंच गये। दो चार हाथ भी लगाया। इन्द्रजीत के साथ झड़प हुई। हजारों मजदूर शर्मा को बेअदबी देख स्तब्ध हो गये। फिर इतने दिनों का दुख, घृणा एवं गुस्से का बांध अचानक टूट पड़ा। जितने वर्दीधारी आये थे वे सब अपने अपने पिता, पितामह को याद किये। कोमल सिंह हवलदार का काम तमाम हो गया। मजदूर वस्ती के महि–

लाओं को यह देखकर करूणा हुई। पुरूषों को मजबूर किया छोड़ देने के लिये। घड़े में पानी लाकर पिलाया। फिर दफाई से चले जाने को कहा परन्तु पशुओं नें मातृस्नेह की उदारता को बाद में उनके ऊपर पाशविक अत्याचार कर बदला चुकाया। इस आजाद देश में पुलिस एवं फौज के जवानों को इस प्रकार की ही ट्रेनिंग मिलती है।

इस "मातृभूमि के रक्षकों" के पास बन्दुक तो जरूर है परन्तु मनोबल नहीं। भोले भोले मजदूरों को हाथ ऊंचाकर बैठ जाने को कहा। मजदूरों ने वैसा किया ही किया। फिर चलाई गोली। बंकर के सामने पहरा देने के लिए चालीस मजदूर जा रहे थे। पुलिस ने घेर लिया। उन में से सिर्फ बोधीलाल ही भाग पाया। बाकी वहीं ढेर हो गये। यह आंखों देखा हाल बताया कन्हैयालाल ने।

सरकार के बयान के मुताबिक सिर्फ एक ही महिला मारी गई है। यह कहां तक सच है? आग बबुला हो उठा पंचू ने कहा– "झूठा सरकार कहीं के"। फिर रोते रोते बोला, भैय्या मैंने खुद अपनी आंखों से देखा पुलिस वाले चार नौजवान औरतों को पकड़ कर सायडिंग के पास बलात्कार कर सुस्त सोई हुई आतंकित औरतों को गोली से उड़ा दिये। सबेरे ४बजे हम उनको देखने गये जिसमें एक को पहचाना, वह सुमित्राबाई थी। फगनीबाई को बैलाडीला में कौन नहीं जानता। १९ साल की मोटियारी गेहुंआ रंग, फूल जैसा सुन्दर चेहरा। उसको दुबे ठेकेदार के मजदूरों ने मुखिया भी चुना था अफसरों को अच्छा कडुवा-मीठा सुनाती थी। फगना बाई के मांग पर बन्दुक रखकर उड़ा दिया। ओह! क्या वीभत्स! बोलते बोलते रो पड़ी उसकी एक पड़ोसी महिला।

शहीदों के लिस्ट में चार महिलाओं का नाम और मिला।

बिन्दा बाई
हीरामनीबाई
बुधियाबाई
देवन्तीनबाई

एन. एम. डी. सी. के एक साहसी युवक का कहना था कि जब वह कर्फ्यू के दिन छिपते छिपते घुम रहा था तब उसने देखा कि एक बुढ़िया के मृत शरीर को एक कुत्ता खा रहा था। फिर वह युवक वीभत्सता और देखने की हिम्मत नहीं कर पाया। पंचू ने बताया हां, हमने उस बुढ़िया के ऊपर गोली चलाते देखा। एक नौजवान मजदूर बुढ़िया को गिरते देख उसे उठा रहा था तभी उस पर भी गोली लगी। बुढ़िया को छोड़कर थोड़ी दूर भागा। फिर जो गिरा तो कभी नहीं उठा।

शहीदों के नाम जो प्राप्त हो सके वे इस प्रकार है—

(१) ढालसिंह
(२) रहीपाल (एस० ६)
(३ हरप ल (वालरेड्डो)
(४) खेमचन्द्र (लोडिंग)
(५) मानसिंह
(६) मायाराम वल्द भीखमदास (५ साल) शहीद की मां भी घायल है पांचोबाई)
(७) गतिराम (११ बी) मालप्पा ठेकेदार
(८) मनबोध वल्द बुधराज (पराडिहो) मालप्पा ठेकेदार शहीद की स्त्री घायल है।

मुख्यमंत्री सखलेचा बोलते हैं—

"बलात्कार नहीं हुआ है" "जेलनबाई" पचेड़ा गांव वाली का डाक्टरी मुलाहिजा कर सखलेचा जी को खबर भेजा जाय। अर्जून्दा के एक १८ साल की युवती पर कम से कम १०-१२ पशुओं ने बलात्कार किया। उसका भी बाप रोते-रोते अपनी इकलौती बेटी के साथ बैलाडीला छोड़ दिया सकलेचा जी खबर लिजिये।

१३-४-७८ तक एक पांच-छः साल के बच्चे की अधजली खोपड़ी मालप्पा केम्प में मौजूद थी जिसे १३-४-७८ की रात को हटाया गया। इस बात का मैं खद गवाह हूं। कम से कम ३५०० मजदूरों की

झोपड़ी आग में भस्म होकर राख में परिवर्तित हो गई जिसमें कम से कम १० हजार लोग रहते थे। वियतनाम में घटित अमरिकी साम्राज्यवादी अत्याचार के साथ इस अत्याचार एवं दमन की तुलना की जा सकती हैं।

छत्तीसगढ़ के दो केन्द्रीय केबिनेट मंत्रियों का दो तोहफा

छत्तीसगढ़ की एक करोड़ जनता के लिए केन्द्र शासन ने दो केबिनेट मंत्री को लिए है। दोनों की तरफ से एक-एक तोहफा दल्लीराजहरा एवं बैलाडीला में मिल चुका हैं। अब कुछ केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं प्रादेशिक मंत्री बचे हुए हैं। क्या पांच साल पूरा होते तक सबकी तरफ से एक-एक तोहफा और मिल जायेगा ?

वर्तमान परिस्थिति

गोलीकांड के बाद काफी दिन बीत गये है। देश भर में धिक्कार हो रहा है। विभिन्न पार्टी के नेतागण नालन्दा के ध्वस्त स्तूप की भांति किरन्दुल पर्यटन पर आ रहे हैं। परन्तु कोई भी वर्तमान आतंक के वातावरण को हटाने लिये कदम नहीं उठा रहे हैं।

आज भी उतना ही आतंक जमा हुआ है। रोज बरोज एक दो मजदूरों को गिरफ्तार किया जा रहा है। पुलिस एवं सिक्यूरिटि के लोग पेट्रोलिंग कर रहे है। मजदूरों के छोटे छोटे नेताओं को भी गिरफ्तारी का डर दिखाकर भगाया जा रहा है। अन्याय के खिलाफ बोलने वाले मजदूरों को काम से निकाला जा रहा है। पुलिस के जवान शराब पीकर महिलाओं के साथ अश्लील व्यवहार कर रहे है। पुराने छत्तीसगढ़ी मजदूरों को हटा कर नये उड़िया गंजामी मजदूर भरती किये जा रहे है। मामुली इलाज कर गोली से घायल मजदूरों को छुट्टी दी जा रही है। लोग भूखे मर रहे है। एस.के.एम.एस. के नेताओं का दर्शन नहीं मिल रहा है। यह अंधकार का युग कब खत्म होगा ? और कब उगेगा जनयुद्ध का वह सूर्य जिसके इन्तजार में बैलाडीला की पहाड़ियां खून से लाल हो गई है।

हम यह कहना चाहते है कि कोई भी नया कदम जनता की स्थिति पर निर्भर होना चाहिए। मशीनीकरण से आज अगर यहां की जनता में छटनी और भूखमरी आती है तो यह कदम गलत है उदाहरण

में लिए हम परिवार नियोजन लें। परिवार नियोंजन जनता के हित में हो सकता है। दुनिया के कई देशों में – पूंजीवादी और साम्यवादी दोनों में इसका उपयोग किया गया है। परन्तु पिछली सरकार ने इसका इस तरह उपयोग किया कि वह जनता पर एक बर्बर हमला था। जनता ने भी उस का प्रतिरोध किया और इमर्जेंसी व इंदिरा सरकार दोनों को उखाड़ फेंका। बैलाडीला में मशीनीकरण के फलस्वरूप छंक्नी हुआ और इतना बड़ा आन्दोलन और गोलीकांड हुआ। इसमें जनता और उत्पादन दोनों का नुकसान हुआ। अत: जनता के स्वार्थ का **पूरा-पूरा** ध्यान रखा में रख–कर और जनता को साथ में लेकर ही उत्पादन व्यवस्था में परिवर्तन लाया जा सकता है।

★★★★

(नवभारत रायपुर दिनांक २९-५-७८ से)

"केन्द्रीय पर्यटन एवं नगर विमानन मंत्री श्री पुरुषोत्तमलाल कौशिक ने यह विचार व्यक्त किया है कि किरन्दुल में पुलिस गोलीचालान टाला जा सकता था, जबकि मध्यप्रदेश के लोक निर्माण मंत्री श्री जवर सिंह के अनुसार खदान के **यंत्रीकरण** और उसके फलस्वरुप श्रमिकों की छटनी ही किरंदुल गोलीकांड की पृष्ठभूमि का मुख्य कारण था...

श्री कौशिक ने कहा कि पुलिस एक श्रमिक को जिस ढंग से गिरफ्तार करने गई थी उससे यही धारणा बनती है कि गत वर्ष के राजहरा गोली-कांड से पुलिस ने कोई सबक नहीं सीखा है"

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद, द्वारा छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी. एम. एस. एस. आफिस, दल्ली राजहरा - 491228 दुर्ग (म. प्र.)

मुद्रक : बजाज प्रिन्टर्स, मेन रोड, दल्ली राजहरा

प्रथम प्रकाशन : 1978 सहायता राशि : २ रुपये

पुनर्मुद्रण : मई, 1993 (पुनर्मुद्रण में मूल पुस्तक का द्वितीय हिस्सा 'छटनी रोकी जा सकती हैं' छोड़ा गया है। मशीनीकरण पर का. नियोगी के सारे लेखों का एक संकलन हम निकालने वाले हैं।)